IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महात्मा गांधी और जयप्रकाष नारायण

(लोकनीति : वैचारिक विरासत)

सुश्री हिमांषु कंवर इंदा

षोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग

जय नारायण व्यास विष्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

सारांष–इतिहास गवाह है, यह एक अद्यतन आष्चर्यजनक सबक है कि आजादी के पूर्व जो नेतागण महात्मा गांधी के करीबी माने जाते थे, उनमें से अधिकांष स्वराज्य प्राप्ति के बाद गांधी विचार से दूर नजर आते थे, आजादी की लड़ाई के दौरान जो उनसे दूर नजर आते थे, उनमें से कई गांधी विचार के करीब आते गए , उसके संवाहक बनते गए। लोकनायक और लोकनीति के पुरोधा जयप्रकाष नारायण (जे.पी.) का नाम ऐसे लोगों में सबसे ऊपर है। जयप्रकाष नारायण ने कहा था कि 'भारत को स्वतंत्र कैसे किया जाए ?' यह खोजबीन या तलाष मुझे कई मतवादों एवं राजनीतिक दलों में ले गई , जब तक मैं इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा कि इसका उत्तर गांधीजी के पास है । गांधी के विचारों में गतिषीलता एवं क्रांतिकारी रुपान्तर की अद्भुत क्षमता है।

संकेतांक षब्द – क्रांतिकारी, सत्यषोधक, वात्सल्य, प्रेम , समरसता, बिहार आंदोलन , लोकतंत्र , तानाषाही, गांधीवादी, सम्पूर्ण क्रांति, लोकनायक, चुनाव चौसर , असली और फसली समस्याएं

जयप्रकाष नारायण जिन्हें आदर और प्यार से देषभर में लोकनायक कहा जाता है, अपनी गतिषील क्रांतिकारी एवं सत्यषोधक वृति के कारण महात्मा गांधी की उस अभूतपूर्व धारा के लोकनायक हैं, जिन्होंने क्रांति को मात्र सत्ता का बदलाव नहीं माना , सम्पूर्णता समग्रता के साथ मानव मुक्ति की एक आरोहण प्रक्रिया के रुप में देखा, समझा और विकसित किया।[1] स्वदेष लौटने पर पंडित जवाहर लाल नेहरु के आमंत्रण पर 1929 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में षामिल हुए , पष्चात् उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया।[2] महात्मा गांधी से मिले और उनको अपना राजनैतिक गुरु मान लिया। परन्तु इसमें कोई मीनमेख नहीं कि जेपी हर किसी के नायक थे , वे धारा के विपरीत चलने के आदि थे , उन्होंने वही किया जिसमें उनका विष्वास था। वे अपने सांचे और संस्कार स्वयं गढ़ते थे। जपप्रकाष नारायण स्वयं ,बुनियादी राह के पक्के पथिक थे। यही वह चीज है जो आज भी हजारों , लाखों भारतीयों को प्रेरित करती रहती है।[3]

महात्मा गांधी का मतलब है – निरन्तर जन संघर्ष चलाना, अपने अधिकारों एवं सामाजिक ,आर्थिक स्वाधीनता के लिए लड़ना , अन्याय , अत्याचार और तानाषाही का डटकर मुकाबला करना।

गांधी का मतलब है – अपने आपको बदलना , साम्राज्यवादी तमाम संपर्कों को तोड़कर स्वावलंबी बनना। गांधी का मतलब है कायरता की जगह परिवर्तन , साम्प्रदायिकता द्वेष की जगह प्रेम वात्सल्य , वर्णवाद की जगह समरसता। (वसुधैव कुटुम्बकम्)।

गांधी होने का मतलब है – सादगी, सच्चाई , प्रेम और मानवता।

गांधी होने के इस निहितार्थ को नेहरु और उनके बाद के नेहरु – गांधी परिवार ने नहीं , अपितु जयप्रकाष नारायण , विनोबा भावे और राम मनोहर लोहिया ने सही अर्थों में चरितार्थ किया। यही कारण है कि आजादी के बाद 1974 के आंदोलन में पुनः गांधी को राजनीति की मुख्यधारा में स्थापित किया गया और उसके अंतिम प्रयोगकर्ता थे –जयप्रकाष नारायण।[5]

महात्मा गांधी की अन्तिम इच्छा थी कि कांग्रेस सत्ता में हिस्सा ना लेकर एक जनसेवी संगठन के रुप में काम करें परन्तु सत्ता के लोभीयों ने ऐसी परम्परा विकसित की कि कांग्रेस सत्ता का पर्याय बन गई , जनसेवा संगठन की गांधी नसीहत सिसकती रह गई। गांधी का मतलब केवल षांति , अंहिसा , सर्वोदय के प्रतीक रुप में रह गया। इस प्रकार गांधी को विकृत रुप में जाना और समझा गया।[6]

जयप्रकाष नारायण ने कहा था कि 'भारत को स्वतंत्र कैसे किया जाए ?' यह खोजबीन या तलाष मुझे कई मतवादों एवं राजनीतिक दलों में ले गई , जब तक मैं इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा कि इसका उत्तर गांधीजी के पास है । गांधी के विचारों में गतिषीलता एवं क्रांतिकारी रुपान्तर की अद्‌भुत क्षमता है।

जयप्रकाष गांधी से षक्ति और विचार लेकर आजादी के बाद सबसे पहले विनोबा के नेतृत्व में चलने वाले सर्वोदय आंदोलन में षामिल हुए। गांधी चम्पारण(बिहार) में सत्याग्रह आरम्भ करते है। जेपी भी जनजाग्रति का बिगुल भी बिहार से बजाते है।

10 फरवरी 1967 के दिनमान अंक में छपी रपट में जयप्रकाष नारायण ने कहा कि इधर हजारों हजार गांव में लोग दाना पानी के बिना मर रहे हैं और अपने को जनता का सेवक कहने वाले चुनाव चौसर में फंसे है।सत्ताधीषों को आमजन की समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है।

जयप्रकाष नारायण , गांधी की तरह ही देष की असली समस्याओं (फसली –समस्याएं नहीं , जो राजनेताओं द्वारा पैदा की जाती है) जैसे भूख , गरीबी , सामाजिक असमानता , भूमि और सम्पति के असमान वितरण से जुडी हुई है, का समाधान चाहते थे। इन समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने ताजीवन संघर्ष किया तथापि सत्ता की निरंकुषता का निरंतर बढ़ते जाना, महंगाई और भ्रष्टाचार का बढ़ना जारी रहा। इन कुप्रथाओं के विरुद्ध तरुणाई ने उग्र रुप धारण किया तथा 18 से 21 मार्च 1974 को विरोध की ज्वाला छात्र आंदोलन के रुप में फूट पड़ी।[7]

इस आंदोलन को कुचलने के लिए सत्ता ने तानाषाही का परिचय देते हुए जगह जगह गोलियां बरसाई , लाठियां भांजी, जेलों में डाला। छात्र आंदोलन को कुचलने के लिए पाष्विक बल के साथ अंग्रेज के जमाने की तमाम चालें चली गई। इस आंदोलन का नेतृत्व जयप्रकाष नारायण ने संभाला । पटना के गांधी मैदान में जेपी का तेजस्वी रुप पुनः प्रकट हुआ। हालांकि जेपी अब 1942 के जवान (लीजेंट हीरो) नहीं थे । बूढ़े , बीमार और कमजोर थे , फिर भी 4 नवम्बर 1974 को उन पर लाठियों का जबरदस्त प्रहार हुआ तथापि उनका आंदोलन गांधी की तरह अहिंसात्मक बना रहा। जैसा कि एक बार सरदार पटेल ने अपने एक व्याख्यान में कहा था कि "लोगों ने गांधी की बात नहीं मानी तो हमारी कौन मानने वाला है।" [8]

जयप्रकाष नारायण ने छात्र आंदोलन का नेतृत्व संभालते हुए छात्र नेताओं के सामने षर्त रखी– "हमला चाहे जैसा हो , हाथ हमारा नही उठेगा।" यह बिहार आंदोलन का नारा बन गया । जयप्रकाष नारायण जैसे बेदाग , लोकप्रिय , तपे –तपाये और बड़े आदमी द्वारा नेतृत्व संभालने का अर्थ था – आंदोलन बहुआयामी और व्यापक दिषा देने वाला होगा।

जुल्म का चक्का और तबाही कितने दिन ?

हम पर तुम पर सर्द सियाही कितने दिन ?

(कवि सत्यनारायण)

....

नागार्जुन ने एक कविता लिखी –

क्या हुआ आपको ?

क्या हुआ आपको ?

सत्ता की मस्ती में भूल गई बाप को ?

इंदुजी, इंदुजी क्या हुआ आपको ?

....

एक और गांधी की हत्या होगी अब क्या ?

बर्बरता के भोग चढ़ेगा योगी अब क्या ?

पोल खुल गयी षासक दल के महामंत्र की ?

जयप्रकाष पर पड़ी लाठियां लोकतंत्र की ?[9]

जयप्रकाष नारायण ने महात्मा गांधी की भांति अपने आपको सत्ता की राजनीति से अलग रखा। संविधान सभा का उन्होंने विरोध किया कि इसका चुनाव नहीं हुआ है, सदस्यता से इंकार किया। उन्होंने जीवन में कोई चुनाव नहीं लड़ा।[10]

जयप्रकाष नारायण लिखते है कि दुनिया में बड़ी – बड़ी क्रांतियां हुई , इंकलाब हुए। चाहे फ्रांस की क्रांति हो, रुस की क्रांति हो, अमेरिका की क्रांति हो या चीन की क्रांति हो। ये सभी क्रांतियां सफल रहीं परन्तु उसके बाद क्या हुआ। हर एक क्रांति के बाद यह देखने में आया कि उस क्रांति का अगुवा नेता अपने देष के सर्वोच्च सिंहासन पर बैठा , सरकार की बागडोर संभाली। अमेरिका , फ्रांस, रुस, चीन, तुर्की, अल्जीरिया , क्यूबा आदि देषों में यही हुआ।

केवल महात्मा गांधी ही एक ऐसे नेता निकले , जिन्होंने अपने हाथ में सत्ता नहीं ली। उनका विष्वास था कि उनके उद्देष्यों की पूर्ति सत्ता द्वारा नहीं हो सकती है। यह उनके चिन्तन का सार था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन सर्वोतम जन–आंदोलन था , यह राजनीति नहीं लोकनीति थी।[11]

जेपी के लोकनीति के विचार और निष्ठा से गांधी जी बेहद प्रभावित थे। लोकसत्ता की संगठित करने के लिए वे जेपी तथा उनके मित्रों की सहायता चाहते थे। जब कांग्रेस ने सरकार का गठन कर लिया तो गांधी जी ने सलाह दी कि संगठन समाजवादियों के हाथों सौंप दिया जाना चाहिए।

सन् 1947 में महात्मा गांधी ने जेपी से कहा कि "मैं तुम्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहता हूं । तुम्हारी वीरता और बहादुरी का लाभ लेना चाहता हूं।" उन्होंने नेहरु जी के समक्ष यह प्रस्ताव रखा लेकिन नेहरु जी ने आचार्य नरेन्द्र देव का नाम यह कहते हुए सुझाया कि वे जेपी से वरिष्ठ है। अन्ततः डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष बनाए गए। [12]

सन् 1948 में नासिक में आयोजित समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में दल के महामंत्री की हैसियत से रिपोर्ट पेष करते हुए कहाकि समाजवाद की स्थापना षुद्ध साधनों के बिना असंभव है।[13] उन्होंने कहाकि – महात्मा गांधी ने हमें बहुत सी बातें सिखाई है परन्तु उनकी सबसे बड़ी सिखावन यही है कि साधन ही साध्य है , साधन पवित्र होने पर ही साध्य पवित्र होगा। जेपी आध्यात्मिक पुनरुत्थान की बात पर लोगों को आष्चर्य भी हुआ कि यह एक मार्क्सवादी कह रहा है? वस्तुतः जेपी स्वतंत्र भारत में समाज की संरचना का आधार समता के साथ नैतिकता चाहते थे।[14]

महात्मा गांधी लिखते है कि 'जयप्रकाष' हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई के एक असाधारण सेनापति है। कोई भी देष ऐसे नर–रत्नों को पाकर गर्व कर सकता है। जवाहर लाल नेहरु और सुभाष की तरह उनमें भी अधीरता की मात्रा जरुरत से ज्यादा है, परन्तु यह तो आज की परिस्थितियों का एक गुण है। मैं जयप्रकाष को अत्यन्त प्रीति और सम्मान की दृष्टि से देखता हूं।"[15]

जेपी जवाहर लाल नेहरु को प्यारे भाई तथा बांग्लादेष के मुजीब बंगबंधु को प्रिय भाई तथा इन्दिरा गांधी को प्रिय इन्दु भतीजी से आत्मीय संबोधन से संबोधित करते थे [16] , तथापि उन्होंने समयानुकूल कटु षब्द और चेतावनी भी देते रहते थे। सीधी सट भाषा में मुजीब साहब को लिखा थाः–

प्रिय भाई मुजीब,

ईष्वर आपको लम्बी उम्र और उत्तम स्वास्थ्य दे ताकि आप अपने तथा साढ़े सात करोड़ देष बन्धुओं के सपने का सोनार बांग्ला साकार कर सकें, इतना ही नहीं बल्कि इस अभिषप्त , बदनसीब उपमहाद्वीप को स्वतंत्र और स्वायत राष्ट्रों के एक सुसभ्य , प्रबुद्ध , सहयोगी और समृद्ध समुदाय में परिवर्तित करने में सहायक हो सकें।...........हमारी युवा , उत्साही और दृढ़निष्चयी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भी व्यूह रचना में कितनी कुषल और कारगर रही है , उन्होंने दक्षिण एषिया में अहम मुकाम हासिल किया है। भारत–बांग्लादेष के बीच और स्वयं आपके साथ भी व्यक्तिगत उष्मा और आदत युक्त अटूट संबंध बनाया है और इस पूरे क्षेत्र को और हिन्द महासागर को , महाषक्तियों के प्रपंच, षोषण और प्रभुत्व से मुक्त कराने का निष्चय घोषित किया है। यह सब उपर्युक्त सपने को साकार करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। यद्यपि पाकिस्तान एक प्रष्नचिन्ह जैसा है – कितने समय तक भगवान जाने।

जेपी की भावनाएं तब बड़ी आहत हुई जब मुजीब ने सत्ता परिवर्तन कर एक दलीय षासन अपनी जनता पर लाद दिया। मुजीब के प्रति जेपी की दृष्टि और दृष्टिकोण ही बदल गया , दिली उष्मा ठण्डी पड़ गई।

मुजीब ने अपने दल को छोड़कर अन्य सभी दलों पर प्रतिबन्ध लगा दिया, अपने दल तथा व्यक्तिगत तानाषाही देष पर थोप दी। जेपी ने इसे एक मुखर्तापूर्ण सर्वनाषी कदम की संज्ञा दी।

उन दिनों दिल्ली में एक बहुत जोरदार अफवाह उड़ी कि मुजीब ने अपने विष्वस्त लोगों के साथ दिल्ली में बनी योजना के अनुसार ही इस पूरी व्यूह रचना पर अमल किया और ऐसी भी अफवाह फैली थी कि भारत भी बांग्लादेष की राह पर ही जाने वाला है।

लगभग वैसा हुआ भी। सत्तांध हुकुमत ने लोकतंत्र को समाप्त कर तानाषाही की स्थापना कर डाली। इतिहास का यह बड़ा दुखान्त माना जाएगा कि इंदिराजी और मुजीब जिनसे बड़ी–बड़ी अपेक्षाएं थीं, दोनों ने ही तानाषाही का रास्ता अख्तियार कर अपना विनाष मोल ले लिया। तानाषाही में मानवीयता दम तोड़ती है। दमन और दलन एक सीमा तक ही सहनीय होता है। जुबान को ताले में नहीं रखा जा सकता है, ऐसे प्रयास क्षणिक ही रहते आए हैं।

21 जुलाई 1975 को चंडीगढ कारावास से प्रधानमंत्री इन्दिराजी के नाम लिखे पत्र के अन्त में जेपी ने लिखा कि –

इससे पहले कि मैं नसीहत के कुछ षब्द कहूं ?

आप जानती हैं कि मैं एक बूढ़ा आदमी हूं । मेरी जिन्दगी का काम पूरा हो चुका है। षिक्षण समाप्त करने के बाद से मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन देष को समर्पित कर दिया था तथा बदले में कभी किसी चीज की कामना नहीं की है। अतः मैं आपके षासन में एक कैदी के रुप में भी संतोष से मर सकता हूं। तो क्या आप ऐसे आदमी की सलाह सुनेंगी?

कृपया उस नींव को मत बर्बाद कीजिए ,जिसे राष्ट्रपिता और आपके उदारमना पिता ने डाली थी। जिस रास्ते पर आप चल पड़ी है ,उस रास्ते पर आगे विषाद और यातना के सिवाय कुछ नहीं है।

आपको विरासत में एक महान सांस्कृतिक परम्परा मिली थीं, ऊंचे जीवन मूल्य मिले थे और मिला था – क्रियाषील लोकतंत्र। अपने पीछे इनके ध्वंसावषेष मत छोड़ जाइये। सुधारने में बड़ा वक्त और श्रम लगता है। हॉं , चीजें पुनः जुड़ेगी ,इसमें कोई मीनमेख नहीं है। लेकिन............एक ऐसी जनता जिसने ब्रिटिष तख्तोताज को हिला दिया, उन्हें बोरिया–बिस्तर सहित स्वदेष लौटने को मजबूर किया। तानाषाही के अपमान और षर्म को हमेषा के लिए स्वीकार हरगिज नहीं करेगी। आदमी के आत्मबल को कभी भी नष्ट नहीं किया जा सकता है। अपनी व्यक्तिगत तानाषाही स्थापित करने के लिए यद्यपि आपने इसे बहुत गहराई से दफना दिया है, यह कब्र में से जीवित होकर उठ खड़ा होगा। यहां तक कि रुस में भी यह धीरे –धीरे सर उठा रहा है।
जेपी इन्दिरा गांधी को तो उस मार्ग से नहीं लौटा सके लेकिन देष की आम जनता ने देष को उस राह से वापस ला दिया। स्वराज्य प्राप्ति के बाद पहली मर्तबा ऐसी परिस्थितियां बनी कि लोकतंत्र देष से अलविदा हो जाएगा , तानाषाही कायम होगी, परन्तु भारत की गरीब और अनपढ़ जनता ने 1977 के चुनाव में स्पष्ट फैसला सुना दिया कि भारत में लोकतंत्र रहेगा और सुरक्षित लोकतंत्र रहेगा।
दिग्गज नेता जयप्रकाष नारायण ने 1974 में अपने लम्बे राजनीतिक जीवन की संध्या में जेपी आंदोलन (सम्पूर्ण क्रांति) की जबरदस्त अगुवाई की, जो उनकी राजनीतिक सोच और कर्म की परिपक्वता की निषानी थी। आजादी के बाद पहले इस जनांदोलन ने आम आदमी की कल्पनाषीलता को जगाया, केन्द्र सरकार को हिला दिया।[17]
जयप्रकाष नारायण , महात्मा गांधी के कुछ विचारों से सहमत नहीं थे। उन्होंने उनकी आलोचना भी की।

सन् 1948 के नासिक अधिवेषन में जेपी ने कांग्रेस से पूरी तरह अलग होने का निष्चय कर लिया हालांकि जेपी के साथ आचार्य नरेन्द्र देव , डॉ. राम मनोहर लोहिया आदि कांग्रेस से पूरी तरह अलग होने के पक्षधर नहीं थे, वे कांग्रेस के भीतर ही समाजवादी धड़ा बनाए रखना चाहते थे।परन्तु जेपी के निष्चय का उन्होंने विरोध भी नहीं किया। जयप्रकाष नारायण ने कांग्रेस छोड़ने के बारे में गांधीजी से परामर्ष किया। गांधीजी ने इसका कोई सैद्धान्तिक विरोध नहीं किया। हां, यह संकेत अवष्य दिया कि इससे समाजवादियों को कठिनाई होगी।[18]
जेपी ने गांधी जी से स्पष्ट किया कि लोकतंत्र में सत्ता पक्ष के साथ–साथ एक विरोधी पक्ष का होना भी जरुरी है। गांधीजी ने विष्वास व्यक्त किया कि ठीक है! मैं जानता हूं कि तुम जहां रहोगे , वहां देष की सेवा करोगे। बहादुर हो।
जयप्रकाष नारायण ने पण्डित जवाहर लाल नेहरु से भी कांग्रेस छोड़ने पर चर्चा की। नेहरु जी ने जेपी को पत्र लिखा यदि हम लोग अलग ही हो रहे हैं तो हम दोस्तों की तरह अलग हों , दुष्मनों की तरह नहीं। 30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी की निर्मम हत्या पर जेपी ने मांग की कि सरकार राष्ट्रपिता की रक्षा करने में असमर्थ रही है, इसलिए सरकार को सत्ता में बने रहने का कोई अधिकार नहीं है, केंद्र सरकार इस्तीफा दे या कम से कम गृहमंत्री पटेल इस्तीफा दें। नेहरु ने कहा कि इसके लिए सिर्फ गृहमंत्री नहीं पूरी सरकार जिम्मेदार है। इसी संबोधन में उन्होंने कहा कि जेपी एक दिन देष की तकदीर गढ़ेंगे। जेपी के प्रति नेहरु में उत्कट स्नेह था , वे जेपी को साथ लेकर चलना चाहते थे, लेकिन जेपी हमेषा सत्ता से बचते रहे।[19] जेपी की गांधी से नजदीकी ज्यादा थी। जेपी की पत्नी प्रभावती ,बापू की दत्तक पुत्री के रुप में साथ रही। वे गांधीजी को अपना दूसरा पिता मानती थी। गांधीजी जेपी को आदर्ष दम्पति की संज्ञा देते थे।
15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। पाकिस्तान की स्थापना से जेपी को महात्मा गांधी को भारी दुःख हुआ। गांधीजी की मृत्यु के बाद जेपी गांधीवादी तरीकों से रचनात्मक कार्य में लग गए। जेपी ,गांधीजी के ग्रामस्वराज तथा ग्रामसभा के प्रबल समर्थक थे।

16 मार्च 1946 के हरिजन में महात्मा गांधी ने लिखा कि– जयप्रकाश की गिरफ्तारी एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। वे कोई मामूली कार्यकर्ता नहीं है। वे तो समाजवाद के एक अधिकारिक प्रवक्ता हैं। कहा जा सकता है कि समाजवाद के विषय में जयप्रकाश जो नहीं जानते हैं, उसे देष में कोई नहीं जानता है। देष की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया है। वे एक फक्कड़ लड़वैया है। उनका उद्यम जानता ही नहीं कि थकावट किसे कहते हैं। सहन करने की षक्ति की उनकी कोई मिसाल नहीं है। सरकार लड़ना ही चाहती है तो यह बात दूसरी है। जेपी के मनोराज्य को गांधीजी ने अपनी सहमति प्रदान की। भारतीय लेनिन, मित्रों के बीच डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा भारतीय जनता के लोकनायक का चिन्तन लोकनीति और लोकनायकत्व की बड़ी थाती है। मूल्यों की राजनीति के पुरोधा जेपी के विचार आज मूल्यविहीनता की राजनीति के दौर में अधिक प्रासंगिक है। जेपी को मैग्सेसे पुरस्कार (1965) के प्रषस्ति पत्र में आधुनिक भारत की लोकात्मा की रचनात्मक अभिव्यक्ति की संज्ञा दी गई। US राष्ट्रपति जिम्मी कार्टर ने जेपी की मृत्यु पर लिखा था कि – जेपी एक महान और सज्जन आदमी थे। दुनिया उनकी कद्र करती है, ऐसी एक अनोखी गांधीवादी विषेषता उनमें थी। अभी दुनिया को इस बात का पक्का विष्वास होना षेष है कि षक्ति नैतिकता से भी उत्पन्न होती है और स्थायी परिवर्तन केवल षांतिपूर्ण क्रांति के लिए भी होता है।सरकारें अपनी सत्ता जनता से ही प्राप्त करती है। सन् 1977 में जब वे अंतिम बार अमेरिका आए थे तब अमरीका को अपना दूसरा घर कहकर संबोधित किया था। जेपी दी ग्रेट।[20]

संदर्भ–

1. षाह , कान्ति –जयप्रकाष की जीवनयात्रा–2010, सर्वसेवा संघ प्रकाषन , राजघाट , वाराणसी, पृष्ठ –प्रकाषकीय iii
2. सिंह, डॉ. हरि कृष्ण, जयप्रकाष नारायण और भारतीय राजनीति – 2018, सीरियल्स पब्लिकेषन्स प्राइवेट लि. नई दिल्ली पृष्ठ –18
3. इंडिया टुडे 23 अप्रैल ,2008, 60 महानतम भारतीय ,क्रांतिकारी पुरोधा, पृष्ठ 24
4. लोकतंत्र समीक्षा
5. सिंह, डॉ. हरि कृष्ण, जयप्रकाष नारायण और भारतीय राजनीति – 2018, सीरियल्स पब्लिकेषन्स प्राइवेट लि. नई दिल्ली पृष्ठ –103
6. सिंह, डॉ. हरि कृष्ण, जयप्रकाष नारायण और भारतीय राजनीति – 2018, सीरियल्स पब्लिकेषन्स प्राइवेट लि. नई दिल्ली पृष्ठ –104
7. सिंह, डॉ. हरि कृष्ण, जयप्रकाष नारायण और भारतीय राजनीति – 2018, सीरियल्स पब्लिकेषन्स प्राइवेट लि. नई दिल्ली पृष्ठ –106
8. षाह , कांति भाई ,गांधीः जैसा विनोबा ने देखा –समझा (1970), सर्व सेवा संघ प्रकाषन ,राजघाट ,पृष्ठ–162
9. सिंह, डॉ. हरि कृष्ण, जयप्रकाष नारायण और भारतीय राजनीति (2018)पृष्ठ–178
10. पंडित श्रीराम ,विप्लवी जयप्रकाष– (1947) सरस्वती पुस्तक मंदिर , नई सड़क दिल्ली ,पृष्ठ–80
11. एलन एंड वैंडी ,जे.पी. हिज बायोग्राफी (1975)ओरियंट लॉगमैन, न्यू दिल्ली ,पृष्ठ–160
12. एलन एंड वैंडी ,जे.पी. हिज बायोग्राफी (1975)ओरियंट लॉगमैन, न्यू दिल्ली ,पृष्ठ–160
13. जे.पी. कृपलानी ,गांधीः हिज लाइफ एंड थॉट (1970) पब्लिकेषन्स डिवीजन भारत सरकार, न्यू दिल्ली ,पृष्ठ–281
14. जे.पी. कृपलानी ,गांधीः हिज लाइफ एंड थॉट (1970) पब्लिकेषन्स डिवीजन भारत सरकार, न्यू दिल्ली ,पृष्ठ–281
15. पंडित श्रीराम ,विप्लवी जयप्रकाष (1947) सरस्वती पुस्तक मंदिर , नई सड़क दिल्ली ,पृष्ठ–भूमिका iii
16. नारायण जयप्रकाष, मेरी विचारयात्रा–भाग 2 (2012) सर्वसेवा संघ प्रकाषन , राजघाट पृष्ठ 3,5
17. इंडिया टुडे –बदलाव की बयार 60 क्रांतियां ,2 जनवरी 2008, दिल्ली, पृष्ठ –38
18. कृपलानी ,जे.पी. गांधी हिज लाइफ एंड थॉट (1970)
19. रंजन , सुधांषु – जयप्रकाष नारायण (1994) नेषनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली ,पृष्ठ –73
20. रंजन , सुधांषु – जयप्रकाष नारायण (1994) नेषनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली ,पृष्ठ –183